प्रिया शर्मा

खामोशी

खामोशी की भी अपनी भाषा है,

जो शब्दों से नहीं, दिल से समझी जाती है।

कभी दर्द की गहरी चुप्प होती है,

कभी सुख की मीठी राहत की तासीर।

जब शब्द थक जाते हैं,

तब खामोशी सब कह जाती है।

आंखों में जो भाव होते हैं,

वो दिल की गहराई से उभर आते हैं।

खामोशी में छुपी होती है एक कहानी,

जो शब्दों से नहीं, दिलों से सुननी जाती है।

इसी खामोशी में रचनाएँ बनती हैं,

और नये एहसास जन्म देती है।

भवानी देव

चल दिए

कर किनारा चल दिए
कुछ करने को चल दिए,
हाथ पर हाथ धरे कुछ नहीं
यही सोच कुछ चल दिए,

प्रेम से हृदय प्रसन्न और जीए
तन पर वस्त्र के लिए चल दिए,
जीवन के हैं रूप कहीं यही सोच
उठे देखा, कोई नहीं, साथ, फिर चल दिए,

प्रेम से निकाला पेट ने, पेट के लिए
हर रात के सपनों के लिए चल दिए,
इस साहिल में हम गए उतर
अब डूबे के पार चल दिए तो चल दिए,

जब तक है साथ सांस जी के जीए
अभी नहीं डर लोगों का चल दिए
प्यार से कर प्यार संभाल कर यार
तुम हम नए हैं सफर पर जो चल दिए,
मालूम है बिन चले, न कुछ किए
कुछ भी नहीं, कुछ के सिवा प्रिये
अभी से कंकर डाल रहा हूं
वक्त पर पानी भी आए, पीए और चल दिए,

ज़िंदगी कुछ नहीं, यही समझ लीजिए,
बिन दोस्त कुछ नहीं गम पीए,
मेरे आंसू को ले गया यूं के अब जीए
मेरे जानी, तू है साथ पास तो चल दिए।